ऐतिहासिक
राम कुमार बेहार

संघर्षों से भरा रहा मधुरांतक देव का शासन काल

10 60 ई के बाद मधुरांतक देव का शासन काल प्रारम्भ होता है। उसके कुल का लांछन धनुव्याघ्र था। उनके ध्वज में ऐरावत के पीछे कमल तथा कदली पत्र अंकित था जो यह दर्शाता है कि वह मूल नागों से पृथक वंश का नाम नृपति था। चक्रकोट तथा भ्रमर कोट बस्तर अंचल में दो मुख्य मंडल हैं। इनमें से भ्रमरकोट मंडल का ही मधुरांतक देव मांडलिक था। मधुरांतक ने धारावर्ष को युद्ध में हरा कर संभवतः राजसत्ता प्राप्त की थी। सोमेश्वर प्रथम ने मधुरांतक को परास्त के बाद उसकी हत्या कर बस्तर अंचल के दोनों मंडलों पर अधिकार स्थापित किया, चक्रकूट नगर को राजधानी बना कर शासन किया। मधुरांतक को राजपुर ताम्र पत्र में भ्रमरकोटच्य का राजा कहा गया है। उसकी विरुदावली बड़ी थी, भोगवती पूर्वेश्वर उसकी विरुदावली थी। मधुरांतक ने नाग साम्राज्य को स्थापित करने के लिए 1065 ई पूर्व अनेक युद्ध किए। यह युद्ध कोरापुट और कालाहांडी क्षेत्र में संभावित हुए। राजा सोमेश्वर ने युद्ध में महाबली मधुरांतक का वध किया।

सुरता
सुधीर सक्सेना

साहसी और दूरदर्शी थे धुर्वाराव

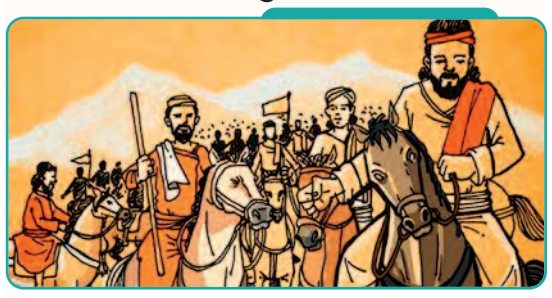

अंग्रेजों के शासन काल में भैरम देव तो खुल कर सामने नहीं आ सके किन्तु धुर्वाराव के नेतृत्व में उसके तालुक की जनता ने अंग्रेजी सरकार के प्रति विद्रोह कर दिया। इलियट (1856) के हवाले से ज्ञात होता है कि आदिवासियों ने गांवों को लूटना प्रारंभ कर दिया। माल से लदी बैलगाड़ियों को अपने अधीन कर लिया। दक्षिण बस्तर में इलियट की सेना तथा तेलंगा माडियों के बीच अनेक संघर्ष हुए। माडिया अपनी सैनिक गतिविधियों के लिए पहाड़ियों को ही केंद्र बनाए हुए थे। वे पूरी तरह छापामार युद्ध का अभ्यास करते और अंग्रेजों से संबंध रखने वाले लोगों पर घात लगाकर हमला करते। सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष 3 मार्च सन 1856 को चिंतलनार में हुआ। अपने तीन हजार साथियों के साथ धुर्वाराव चिंतलनार की पहाड़ियों पर घात लगाकर बैठ गया और वहां से प्रातः आठ बजे गुजरने वाली सेना पर टूट पड़ा। घात प्रतिघात की स्थिति सांयकाल साढ़े तीन बजे तक चलती रही। ब्रिटिश अधिकारियों के अनुसार आदिवासियों ने यहां कड़ा मुकाबला किया था। विद्रोह को दबाने के लिए भोपालपट्टनम का जमींदार अंग्रेजी सेना के साथ था। वह घायल हो गया। भोपालपट्टनम का एक सरकारी कर्मचारी मारा गया। 460 माडिया महिलाओं तथा बच्चों को बंदी बना लिया गया, जिनमें धुर्वाराव के पत्नी और बच्चे भी थे। धुर्वाराव को पकड़ कर फांसी दे दी गई। उसके तालुका को छीनकर इसे पुरस्कार स्वरूप भोपालपट्टनम के जमींदार को दे दिया गया। धुर्वाराव को फांसी हो जाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने लिंगागिरी परगना भोपालपटनम के जमींदार यादोराव के पिता के सुपुर्द कर दिया गया, क्योंकि विद्रोह दबाने में यादो राव के पिता का महत्वपूर्ण योगदान था।

लोक नृत्य
विजय चौरसिया

ताली बजाए जाते हैं तपाड़ी नृत्य में

छत्तीसगढ़ के आदिवासी अंचलों में तपाड़ी नृत्य केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। इनकी तीन रचनाएं होती हैं। पहले में युवतियां आमने सामने दो कतारों में खड़ी होती हैं। इसमें एक दूसरे का हाथ नहीं पकड़ा जाता वरन आगे की ओर झुक कर हाथ में तालियां बजाई जाती हैं। इसमें पद निक्षेप के बाद थोड़ा विराम दिया जाता है। दूसरे में पहले के थोड़ी देर बाद एक कतार की युवतियां दूसरी ओर पीठ कर लेती हैं और घुटनों पर झुककर बाहों को लहराते हुए जोर शोर से तालियां बजाती हैं। तीसरी ओर अंतिम रचना में दोनों कतारें मिल कर एक बड़ा घेरा बनाती हैं। सभी का चेहरा घेरे के अंदर की ओर रहता है और सभी नीचे की ओर झुक कर हाथों से तालियां बजाती हैं। इस नृत्य में मांदर का उपयोग नहीं होता, युवतियां सिर्फ थपेड़िया बजाती हैं। इसलिए इसका नाम तपाड़ी नृत्य पड़ा।

हमर देहात क्षेत्र म चुल्हा म आगी बारे बर छेना कस खरसी के उपयोग करे जाथय। येकर आँच बड़ रगरग-रगरग करथय। ये बड़ सस्ता अउ सुलभ चीज आय। जिंकर घर गरुवा नइ राहय, तहुँहर बाहिर ले बिनके ले आथँय। खरसी ले गरीब-ले-गरीब मनखे के चुल्हा जलथय। गोरसी भरे म घलो ये काम आथय।

आवव जानन हमर महत्वपूर्ण जिनीस खरसी

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

गोस्वामी तुलसीदास जी के दू डाँड़ म सांसारिक जीवन-कल्याण के सार तत्व अउ गूढ़ रहस्य समाय हे। दिगर के भलाई ले मनखेपना के सीख मिलथय। पर के भलाई ले ही दुनियादारी ल जाने-समझे जा सकथय। अइसे लागथय जइसे कि सृष्टि के रचइया हर मनखे बर जम्मो जीव-जगत ल कुछ न कुछ कारज सौंपे हे। येकर सती तो मनखे खातिर एक ठन प्राणी के हित जग जाहिर हे; अउ वो प्राणी आय- गाय यानी गउ माता।

गउ माता के महत्व अउ उपयोगिता ल जानत-परखत शायद दुवापर-युगश्रेष्ठ यदुवीर श्रीकृष्णचंद्र जी ह गोपालन के कारज ल अपन हाथ म लियीन; अउ वो गोपाल कहलाइन। ये उँकर सामाजिक संदेश आय, जेन आज अनुकरणीय हे। गउ माता के जियत काया भर ही नहीं; भलुक वोकर मृत देह घलो मनखे बर बड़ उपयोगी सिद्ध होथय। गाय के दूध, मल-मूत्र अउ चर्म के संगे-संग, वोकर सकल अंग मनखे-हित बर होथय। अइसना गउ माता के काँचा गोबर ह तो उपयोगी होबे करथय, संगे-संग वोकर सुखाय गोबर ह घलो हमर गाँव अंचल म बड़ महत्वपूर्ण जलाऊ जिनीस होथय। अउ उही जिनीस ह कहलाथय- खरसी। तीन अक्षर के 'खरसी' शब्द ह खड़-खड़ (खर-खर) ले सुखाय गोबर ले मिले जलाऊ चीज हरय। गोबर के सुखाय रूप ही आय खरसी। गाय-गरु अउ भँइस-भँइस्सा के घर, कोठा या घर ले बाहिर म उँकर करे गोबर खरसी बनथय। गोबर ह लकलक ले

चिन्हारी: टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

घाम म जतका जादा सुखथय, वोतका बढ़िया गुणवत्ता वाले खरसी बनथय।

घर-द्वार या कोठा-कुरिया म बहुते-कम खोरसी देखेला मिलथय, काबर कि गोबर ल सुखाये के पहिली ले ही बिन ले जथय; पर जब गाय-गरु अउ भँइस-भँइस्सा ह घर ले बाहिर खेतखार, मेड़पार या भर्री-भाँठा म घूमे-चरे बर जाथँय, उही कोती गोबर करथँय, त वो गोबर ह घाम म खड़-खड़ ले सुखा जाथे, इही गोबर खरसी बनथय, याने गोबर के बहुते-जादा सुखाय रूप ही खरसी आय। बाहिर ले बिनके लायले अउ गोबर ले बने छेना के जगा बउरे ले येला 'बिनिया छेना' घलो कहिथय।

हमर गाँव-देहात म लोगन, अउ जादातर दस-बारा बरस के नोनी या माईलोगिन मन जउँहा या बोरी धरके खरसी बिने बर जाथँय। ठर-ठर ले सुखाय खरसी ल बिनके पहिली एक जगा सकेलथँय, ताहन फेर जउँहा-बोरी म भरके लाहत-तापत, थप-थप पछीना म माईलोगिन मन मुँड़ म बोहके घर आथँय। येमा माईलगिन मन के सहनशीलता अउ उँकर मेहनत मिंझरे रथँय। हमर देहात क्षेत्र म चुल्हा म आगी बारे बर छेना कस खरसी के उपयोग करे जाथय। येकर आँच बड़ रगरग-रगरग करथय। ये बड़ सस्ता अउ सुलभ चीज आय। जिंकर घर गरुवा नइ राहय, तहुँहर बाहिर ले बिनके ले आथँय। खरसी ले गरीब-ले-गरीब मनखे के चुल्हा जलथय। गोरसी भरे म घलो ये काम आथय। गोरसी के पलापला राखर म येला चपक के राखे ले बढ़िया रग-रगात रहिथय, जेन ह आगी सुल्गाय के काम आथय। घर म कँइच्चा गोबर नइ राहय ले खरसी ल गुड़ा करके पानी म घोर के दुवार-अंगना ल लिपे अउ छरा देये जाथय। ये जैविक खातू तको बनथय। हमर अंगाकर अउ पान रोटी हर येकर आँच म बड़ बढ़िया चूरथय। दूध चुरोय बर घलो खरसी आगी बने होथय। खरसी-आगी के पलपला म लसून-मिरचा बढ़िया भुँजाथय। आलू, गोंदली अउ काँदा-कुसा हर बड़ बढ़िया उसनाथय खरसी-आगी मा। खरसी राख ह बरतन माँजे के काम घलो आथय। कोनो-कोनो क्षेत्र म खरसी आगी ले देव-धामी ल हूम-धूप देवई पवित्र माने जाथय। जानकार मनखे मन नान्हे लइका मन ल तेल-फुल लगावत खरसी-आगी के मद्धम आँच ले सेंकई ल बने मानथँय। बाँस के कमचिल अउ खरसी-आगी के आँच के सेंकई ल नान्हे लइका मन के बदहजमी बर दवई अस माने जाथय। हमर देहात म खरसी के संबंध म एक ठन टोटका घलो हावय कि कोनों मनखे ल खरई-ठनकी होय (धरे) ले कोथा म खरसी ल थोरिक चपक के राखे ले खरई-ठनकी बने होथय।

हमर गाँव-देहात म खरसी के उपयोगिता ल जानत-समझत हमला गउ माता के महत्व ल जानना-समझना जरूरी हे। आज हमला गउ माता ले मिले खरसी ल बउरत हमर देहाती संस्कृति ल बचाय रखना घलो जरूरी हे। स्पष्ट हे, हमर गउमाता के संरक्षण अउ संवर्धन बहुते जरुरी हे।

गांव की कहानी : राहुल कुमार सिंह

छत्तीसगढ़ के अधिकांश गांव सोने के नाम पर

छत्तीसगढ़ में अनेक गांव का नाम सोने के नाम पर होता है। और वास्तव में स्वर्ण की प्राप्ति या उससे संबंधित खोज के प्रमाण को भी दर्शाते हैं। छत्तीसगढ़ में सोन, सोनसरी, सोनाढुला, सोनाडीह, सोनतरई, सोनबरसा, सोनसरी और सोन सरार नाम के कई गांव देखने मिल जाते हैं। अमीर धरती के गरीब लोग जुमला वाले छत्तीसगढ़ का सोनाखान, अब तक मिथक सा माना जा रहा, सचमुच सोने की खान साबित हुआ है। पिछले दिनों सोनाखान के बाघमारा क्षेत्र की सफल नीलामी से छत्तीसगढ़ गोल्ड कंपोजिट लाइसेंस की नीलामी करने वाला पहला राज्य बन गया है। बलौदाबाजार जिले के सोने की खान, बाघमारा क्षेत्र 608 हेक्टेयर में फैला है। आंकलन है कि यहां लगभग 2700 किलो स्वर्ण भंडार है। यहां खोज का प्रारंभ 1981 में किया गया था। इस गांव के आसपास भी स्वर्ण प्राप्त होने की पुष्टि हो चुकी है। इसी तरह इस गांव का सम्बन्ध महानदी से है तथा महानदी के किनारे खास कर मांद संगम चंदरपुर और महानदी की सहायक ईब व अन्य सहायक जलधाराओं के किनारे लोगों को सोना निकालने के काम में तल्लीन देखा जा सकता है। सोना झारने या अलग करने वाले लोगों के रहने वाले गांव को सोनझरिया भी कहा जाता है। सोना झारने के लिए सोनझरा छिछला, अवतल अलग अलग आकार का कठौता इस्तेमाल करते हैं। इनका पारंपरिक तरीका है कि जलधाराओं के आसपास की तीन कठौता मिट्टी लेकर स्वर्ण कण मिलने की संभावना तलाश करते हैं इस क्रम में सुनहरी पट्टी मिलते ही सोना झारते, रास्ते में मुश्किलों को नजर अंदाज करते हुए आगे बढ़ने लगते हैं। ऐसी मिट्टी को पानी से धोते धोते मिट्टी घुल कर बहती जाती है और यह प्रक्रिया दुहराते हुए अंत में सोने के चमकीले कण अलग हो जाते हैं।

लोक साहित्य
डा विनोद कुमार वर्मा

छत्तीसगढ़ी शब्द में उलुहा और उसका महत्व

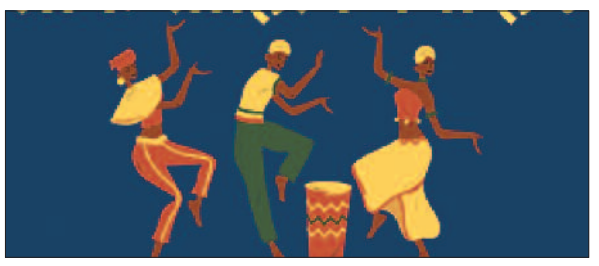

छत्तीसगढ़ी में कई ऐसे शब्द हैं जिसका एक विशेष महत्व होता है। ऐसे ही एक विशुद्ध शब्द उलुहा है जिसका अर्थ है - बीज से नवस्फुटित कोंपल जिसमें छोटी छोटी पत्तियां और शाखाएं हों , जो पौधा बनता है, जिसमें जीवन का चिन्ह तो है ही, साथ ही वह वृक्ष बनने की पूरी क्षमता भी रखता है। उलुहा शब्द का प्रयोजन यहां एक और अर्थ में भी लिया जाता है -जब पेड़ पौधे की पत्तियां झड़ जाती है तब कुछ दिनों के बाद उसमें नई शाखाएं और उन शाखाओं में कोमल कोमल पत्तियां दिखाई पड़ती हैं। इन नवस्फूटित शाखाओं और पत्तियों को भी उलुहा कहा जाता है। देखें यहां संबंधित कविता -

उलुहा बेटी के गुहार,
दाई मोला तै झन मार।
बाबू दुनो रात कन,
सलाव होवत रहा।
ए दारी के फेर टूरी ए,
तुमन कहत रहा।
मैं पेट भीतरी म,
सुलियाय उलुहा बेटी,
अभिमन्यु कस,
तुमन के गोठबात ल,
चुप्पे चुप सुनत रहें।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

लोक चित्र
वसंत निरगुणे

लोक चित्र में मिथक और प्रयोग

लोक में भी अनेक मिथ कथा चित्र पर्व त्योहारों पर बनाए जाते हैं। मिथ कथा चित्रों के विषय किसी पुरा आख्यान, लोक विश्वास, लोक आस्था के नायक नायिका, देवी देवता पर केंद्रित होते हैं। ऐसे मिथ कथा चित्रों की परम्परा को लोक में अखंडित रूप में देखने की परिपाटी है।

लोक साहित्य में मिथकों का जितना प्रयोग मिलता है, उतना ही लोक चित्रों में भी मिलता है। कोई भी लोक चित्र बिना मिथक के पूरा नहीं होता। अनुष्ठानिक चित्रों की प्रवृति पूर्णतः मिथकीय होती है, क्योंकि उनमें बनाई जाने वाली आकृतियों के पीछे कोई न कोई कथा होती है। मनुष्य पेड़ पौधे, नदी पहाड़,दैनंदिनी वस्तुओं के रूपाकार, संकेत, बिम्ब, प्रतीक या अभिप्रायों के माध्यम से उकेरे जाते हैं। अलंकरण में खींची जाने वाली रेखाएं, वृत, त्रिभुज, चतुर्भुज, लटकन आदि मिथकथा चित्रों में कोई न कोई मिथकीय रूप ग्रहण कर लेती है। भील जनजाति में बनाया जाने वाला पिथौरा आलेखन पूर्णतः मिथ कथा चित्र परम्परा का संपूर्ण चित्र कहा जा सकता है। इसमें सभी चित्रों के पीछे कोई न कोई अनुष्ठान, गाथा और श्रद्धा का भाव निहित है।

लोक में भी अनेक मिथ कथा चित्र पर्व त्योहारों पर बनाए जाते हैं। मिथ कथा चित्रों के विषय किसी पुरा आख्यान, लोक विश्वास, लोक आस्था के नायक नायिका, देवी देवता पर केंद्रित होते हैं। ऐसे मिथ कथा चित्रों की परम्परा को लोक में अखंडित रूप में देखने की परिपाटी है। मिथ कथा चित्रों की प्रत्येक बात का अनुसरण लोक में प्रायः वैज्ञानिक सच की तरह किया जाता है। मिथ कथा चित्रों की आस्था और अनुष्ठान बहुत कम बदलते हैं क्योंकि मिथक यथार्थ से कहीं ऊपर शाश्वत सच के नजदीक होता है। इसीलिए मिथ, मिथक और मिथ कथा चित्रों पर लोक में सहज विश्वास देखा जाता है।

मिथ कथा चित्रों के सृजन में मानवीय संवेदनाओं को सच्ची अभिव्यक्ति मिलती है। कई मिथक और मिथ कथा चित्रों में आसपास की अदृश्य पराशक्तियों का आव्हान मिलता है और उनमें जीवन की सुरक्षा और मांगलिकता के वरदान की मौन प्रार्थना होती है। तब मिथ कथा चित्र भाव , भाषा और प्रतीक से बहुत ऊपर की चीज हो जाते हैं।